ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - II April - June - 2021

ENGLISH PART - III / MARATHI

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - X. ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2021
AJANTA - ISSN - 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	कोविड-१९ आणि त्याचा भारतातील विविध क्षेत्रावरील परिणामाचा अभ्यास **प्रा. शत्रुघ्न नामदेव लोहकरे**	६३-६८
१४	कोविड-१९ चे भारतीय शेतीवरील परिणाम **श्री. सुकुमार दत्ता पाटील**	६९-७४
१५	कोविड १९ या आजाराचे ग्रामीण लोकांच्या मानसिक आर्थिकतेवर आणि शारीरिक दिनचर्येवर होणारा परिणाम **क्षीरसागर अस्मिता विश्वास**	७५-७९
१६	कोविड-१९ च्या दरम्यान स्थलांतरित कामगारांचे प्रश्न व अडचणी **डॉ. भानुदास धोंडीबा शिंदे**	८०-८४
१७	प्रवासी श्रमिकों की वेदना-पीड़ा दर्शाती डॉ. हुबनाथ पाण्डेय की कविता **डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी**	८५-९०

१७. प्रवासी श्रमिकों की वेदना-पीड़ा दर्शाती डॉ. हुबनाथ पाण्डेय की कविता

डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी
सहयोगी प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय पेंढारी, अलिबाग.

डॉ. हुबनाथ पाण्डेय एक प्रतिभावान साहित्यकार है। वे एक लेखक, कवि, और आलोचक भी है। किशोरावस्था से ही काव्य रचना की ओर अग्रेसर रहे। उनका जीवन बाल्यकाल से अव्यवस्थित और संघर्षभरा रहा। अतः उनके काव्य में भी दलितों, पीड़ितों, किसानों, महिलाओं, श्रमिकों का संघर्ष देखा जा सकता है। पंद्रह सोलह साल कि उम्र में उन्होने खलील जिब्रान का 'विरोधी आत्माएँ, उपन्यास पढ़ा जो उन्हें फुटपाथ पर कहीं मिल गया था। उस उपन्यास ने हुबनाथ जी को पूरी तरह बदल दिया। खलील जिब्रान का साहित्य उनके लिए प्रेरणा रूप रहा क्योंकि उनके अंदर पूरे सिस्टम के लिए एक तरह का विद्रोह है। विद्रोह के साथ वे समानता और वैश्विक न्याय स्थापित करना चाहते थे। शायद इसी कारण समाज में कहीं भी गलत होता देख हुबनाथ जी का मन विद्रोह कर उठता है। वही विद्रोह उनके 'लोअर परेल,' 'कौए,' 'तीसरी मिट्टी,' 'अकाल' आदि किताबों में अभिव्यक्त हुआ है। उनकी लिखी फिल्म 'बाजा' के लिए बेस्ट चिल्ड्रन फिल्म राष्ट्रीय अवार्ड से उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। सम्प्रति वे मुंबई विश्वविद्यालय में वे हिन्दी विषय के सहयोगी प्राध्यापक के रूप में कार्यरत है। अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन से उनका गहरा लगाव रहा है। इसी कारण वे आज सर्वोदय मण्डल और स्त्री बालशक्ति जैसे संघटनोंसे जुड़कर अध्यापन के साथ साथ समाज विधायक कुछ न कुछ कार्य करते रहते है। मुंबई विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग की भी वे कार्यक्रम अधिकारी के रूप मे ज़िम्मेदारी बखूबी संभाल रहे है।

आज पूरा विश्व कोरोना वायरस के चपेट में आ गया है। पूरी दुनिया में कोरोना वायरस का प्रकोप भयानक रूप ले चुका है। लाखों लोगों की मौतें हो चुकी है। वैश्विक स्तर पर मंदी, औद्योगिक संस्थानों का उत्पादन बंद होना, भय और डर के वातावरण की निर्मिति, बेरोजगारी आदि इसके दुष्परिणाम है। इसलिए कोरोना आंतरराष्ट्रीय तनाव का कारण बना हुआ है। सर्वत्र संभ्रम है। आगे क्या होगा किसी को पता नहीं। पर हुबनाथ जी को पता था क्या करना है? कोरोना काल में वे निरंतर काव्य लेखन करते रहे। वे समाज की गतिविधियों का सूक्ष्मता से निरीक्षण करते है इसलिए उनके काव्य में श्रमिकों का क्रंदन अभिव्यक्त हुआ है। उन्होने अपने काव्य से सबका मन मोह लिया। सोशल मीडिया पर उनकी कविताओंने काफी लोकप्रियता हासिल की है। 'फेसबुक लाइव' पर उनके काव्यपाठ भी हो चुके है।

भारत में राष्ट्रव्यापी तालाबंदी लागू किए जाने के कारण व्यवसायों कारखानों और कार्यालय बंद होने की वजह से देशभर में लाखों लोगों की आजीविका प्रभावित हुई। विशेष रूप से प्रवासी श्रमिक सबसे बुरी तरह प्रभावित हुए क्योंकि उनमें से कईयों ने अपनी नौकरी खो दी थी। उन्हें बचाने हेतु सामाजिक सुरक्षा कवच उपलब्ध नहीं था। उस समय प्रवासी श्रमिकों की सबसे बड़ी समस्या भूख थी। श्रमिक असहाय थे। उन्हे ऐसा लग रहा था की भूख उन्हें कोरोना वायरस से पहले मार देगी। श्रमिकों के इसी डर को हुबनाथ अपनी कविता 'भूख से डर लगता है' में अभिव्यक्त करते है –

"मौत से डर नहीं लगता साहब
डर तो भूख का है
जिसका इलाज फिलहाल
ऊपरवाले के पास भी नहीं।"

'खुशफहमी' कविता में भी वे भूख की पीड़ा को उकेरा है--

"कोई नहीं जानता
जगह-जगह बट रहे अनाज
पक रहे भोजन बन रहे पैकेट
कितनों तक नहीं पहुंचे कितने भूखे सोए कितने कब से नहीं रोए
हाथ धोने की दौड़ में कितनों ने हाथ धोएँ
साबुन से नहीं जान से....."

इस कविता में हुबनाथ गरीबी और भूख की बेचारगी को अभिव्यक्त करते है। उनके काव्य में गहरी सूझ-बुझ का पता चलता है। साथ ही उनके काव्य में बुद्धिवाद और हृदय का सुंदर समन्वय प्राप्त होता है।

तालाबंदी ने रोटी छिनी तो श्रमिकों के कई परिवार गांव की ओर निकल पड़े। पलायन की रोंगटे खड़े करने वाली तस्वीरें मीडिया पर वायरल हुई। मध्यप्रदेश के इंदौर बाईपास पर देखा गया बैलगाड़ी में बैल की तरह जुत गया इंसान। एक बैल, एक इंसान और बैलगाड़ी का डगमग डगमग चलता पहिया। तालाबंदी में जिंदगी किस तरह पीस रही। किस तरह यह गरीबी इंसान को बैल की तरह जुतवा रही महाराष्ट्र से राजस्थान जाने वाली परिवार की दर्दभरी तस्वीर जिसने देखी वह भावुक हो गया।

कक्षा आठ में पढ़ने वाली 15 साल की ज्योति तालाबंदी में अपने पिता को साइकिल पर बिठाकर एक हजार किलोमीटर से ज्यादा की दूरी आठ दिन में तय करके गुरुग्राम से बिहार के दरभंगा के सिरहुली गांव पहुंची। यह कहानी वायरल होकर इतनी जगह फैली की अमेरिका के राष्ट्रपति की बेटी तक को इसपर टिप्पणी करनी पड़ी। करोड़ों की संख्या में मजदूरों का पलायन के साथ संघर्ष का सबसे अधिक दुखद पहलू साबित हुआ। पैरों में छाले, भूख, प्यास, साधनों का अभाव, बच्चों और महिलाओं के साथ

पैदल चलने की मजबूरी। यह सफर एक दो किलोमीटर नहीं, हजारों किलोमीटर। भारत के इन मौन कामगारों की दयनीय और दर्दनाक दशा देखकर आंखे नाम होती है। इसलिए हुबनाथ अपनी 'श्रमिकमेध यज्ञ' कविता में लिखते है--

"भीषण अकाल में
दूध, मांस और श्रमदान करने वाले मवेशी
दाग कर छोड़ दिए जाते हैं असहाय अनाथ उपेक्षित
अपने बल पर जीने या फिर दुर्भाग्य से मर जाने के लिए
उनके लिए ना तो आँसू बहाए जाते हैं न उन्हें याद ही किया जाता है।

इस कविता में कोरोना महामारी में श्रमिकों के जीवन का दुख, दैन्य, शोषण, कठोरता और कुरूपता का नग्न चित्र उन्होने प्रस्तुत किया है। श्रमिक मवेशी की तरह है। जिए, मरे कौन पूछता है उसे? कौन है जो उनके लिए आंसू बहाए ? कौन है जो उन्हे याद करे?

"मवेशियों की सड़ी लाशे
खाद बनकर खिलेगी जंगली फूलों में
ऋषि लिखेगा इतिहास अकाल बेला का
और कोई जिक्र नहीं होगा
मरे मवेशियों और भेड़ियों और गिद्धों और कौओं का ..."

कोरोना महामारी का यह चिंताजनक पक्ष है। पीड़ित मानवता की कोई किसी प्रकार की मदत करने की स्थिति में नहीं है। हुबनाथ इस प्रभाव को गहरे में महसूस कर रहे है। और व्यक्त कर रहे है।

तालाबंदी में अंतरराज्यीय यात्रा पर प्रतिबंध लगाया गया। चूंकि परिवहन के सभी साधन बंद थे। मजदूर निराश, हताश होकर पैदल ही निकल पड़े। अपने-अपने सामान और बाल बच्चों को संभालते। धूप, ताप, सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना। इसलिए निकले कि इन दिनों में और कहीं सहारा मिले ना मिले घर, परिवार, गांव वाले जरूर पनाह देंगे। पर गांव वालों ने गांव में घुसने तक नहीं दिया। परिवार वालों ने कहा अपना टेस्ट कराकर आए। उन्हे गांव के बाहर क्वॉरेंटाइन किया। सड़क पर उन्हे एकत्रित बिठाकर उनपर सैनीटाइजर छिड़का गया। उनमें छोटे बच्चे भी थे। सैनिटाइजर के कारण लोगों के आंखो कि जलन होने लगी। इस प्रकार घर वापसी किए मजदूरों के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। [बरेली, उत्तरप्रदेश]

वैसे भी लोग आपत्ति और मुसीबत के वक्त घर की और ही भागते है जहां उनके अपने होते हैं। श्रमिक पलायन कर रहे थे क्यों कर रहे थे? इस प्रश्न का सटीक उत्तर हुबनाथ अपनी कविता 'हम भागे थे' में देते है--

"हाँ ।
हम भागे थे
अपने गाँव से भागे थे, जन्मभूमि से भागे थे
अकाल से भागे थे बाढ़ से भागे थे
भूख से भागे थे बेकारी से भागे थे
शोषण से भागे थे अन्याय से भागे थे
खेती से भागे थे महंगाई से भागे थे
राजनीति से भागे थे लोग भाग रहे थे ..."

इस कविता का एक एक शब्द मन को बेचैन करता है। प्रगतिशील साहित्यकार जैसे भव्य, महान और आदर्श की ओर आकृष्ट न होकर कुरूप, कुत्सित, पतित एवं सत्य का अंकन करता है। वह ताजमहल की भव्य कलापूर्ण दीवारों के भीतर भी उन्हे खड़ा करनेवाले श्रमिक वर्ग की हाहाकार सुनता है वैसे ही हुबनाथ पांडेय की कविता है। हुबनाथ की इन कविताओं में संवेदना की अतल गहराई मिलती है।

श्रमिकों के बिना किसी भी औद्योगिक ढांचे के खड़े होने की कल्पना नहीं जा सकती। इसलिए श्रमिकों का समाज में अहं स्थान होता है लेकिन आज श्रमिकों को इंसान की तरह जीने की सहूलियत नहीं मिल रही है। वे इस तरह का जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। 24 मार्च 2019 से देशव्यापी तालाबंदी की वजह से अभी तक कई मजदूर घर जाने की चाह में रेल और सड़क हादसों की चपेट में आकर अपनी जान गवा चुके हैं। तालाबंदी लागू होने की 4 दिन बाद 28 मार्च को दिल्ली के एक रेस्तरां में काम करने वाला वेटर रणवीर मध्य प्रदेश के मुरैना स्थित अपने घर जा रहा था। थकान और पानी की कमी के चलते घर से 200 किलोमीटर पहले आगरा में उसकी मौत हो गई। गुड़गांव के पास 30 मार्च की चपेट में को एक कंटेनर की चपेट में पांच अन्य मजदूरों की मौत हो गई। इससे पहले 27 मार्च को 8 मजदूर एक सड़क हादसे में मारे गए। ये मजदूर कर्नाटक स्थित अपने घर पैदल जा रहे थे। यह हादसा हैदराबाद के बाहरी इलाके में हाईवे पर हुआ। महाराष्ट्र के औरंगाबाद में दर्दनाक हादसा हुआ। औरंगाबाद से छत्तीसगढ़ अपने घर लौट रहे 16 मजदूरों की मालगाड़ी की चपेट में आने से मौत हो गई। जिस रोटी की तलाश में वे घर से निकले थे वह बेजान शरीर के पास बिखरी पडी हुई थी। मजदूरों के कटने का यह मंजर दिल को चिरता रहा। लॉकडाउन के चलते सभी मजदूर अपने घर जाने के लिए 40 किलोमीटर चलकर आए थे। थकान ज्यादा लगी। वह पटरी पर सो गए लेकिन उन्हें क्या पता था उनका सफर यहीं खत्म हो जाएगा। कोरोना वायरस का संकट और लॉकडाउन प्रवासी मजदूरों के लिए दोहरी मुसीबत बन गया। यह उनके लिए 'काल' बन गया। लोगों में रोजी-रोटी की जद्दोजहद और घर लौटने की कोशिश में अनेकों प्रवासी मजदूरों ने अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

इस दर्दनाक हादसे की भयानकता को हुबनाथ अपनी 'हत्यारे' कविता में इस तरह वाणी देते है --

"उन्हे पता था कि
सड़कों पर गाड़ियां पटरी पर रेलें अब नहीं चल रही
उन्हे आदत थी नंगे जमीन पर सोने की
सूखी रोटियां और प्याज सिरहाने रख कर वे सो गए थे रेल की पटरियों पर....
कितनी उम्मीद से पटरी के तकिए पर हारा हुआ सिर रखें
जब फैलाएं थे पैर पटरी के बाहर निकल गए थे एक फुट चौड़े
सिमेंट की जिस सतह पर वे लेटे थे उसे स्लिपर कहते हैं यह उन्हें नहीं पता था
उन्हें यह भी पता नहीं था जिसे लोग समझेंगे सिर्फ एक दुर्घटना
यह है निर्मम हत्या
और कहीं कोई पता नहीं हत्यारे का"

हुबनाथ ने इस कविता में श्रमिकों की मर्मांतक पीड़ा को उजागर किया है। जैसे उनका भोगा हुआ यथार्थ हो। अपने आसपास के श्रमिकों के दुख, पीड़ा को इन्होने गहराई के साथ साक्षाकृत किया और उनकी विडंबनाओं, विकृतियों को तीखेपन के साथ उजागर किया।

एक मजदूर देश के निर्माण में बहुमूल्य भूमिका निभाता है। देश के विकास में जितना योगदान पुरुष श्रमिकों का है उतना ही महिला कामगारों का भी है। दुनिया को जन्म देनेवाली स्त्री पर उसके हिस्से में स्वतन्त्रता की सुबह आई ही नहीं। उसे गुलामी के अलावा कुछ नहीं मिला। महिलाओं पर होने वाले इस अन्याय का पर्दाफाश हुबनाथ अपनी कविता 'महामारी' में करते है--

"देश की बहुत सारी औरतें
जरा भी विचलित न हुई
यह सुनकर कि अब कुछ महीने
घर की चौखट के भीतर ही रहना होगा उन्हें
जब तक खत्म नहीं होता महामारी का असर
सुनकर वे हल्के से मुस्कुराई भर और वैसे ही रही
जैसे सदियों से थी बिना किसी महामारी के"

सूक्ष्म निरीक्षणशक्ति की गवाह है हुबनाथ की ये कविता। उन्हे संसार के सब पीड़ित लोगों से प्यार एवं सहनुभूति है। इसलिए वे अपनी कविता में शोषित, अधिकारों से वंचित श्रमिकों के संघर्ष को अपने काव्य में स्थान देते है। उनका जितना संवेदना का पक्ष सशक्त है उतना ही अभिव्यक्ति पक्ष भी। इसीलिए उनके काव्य में सामाजिक समस्याओं का चित्रण, अत्याचार से पीड़ित त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्राप्त होती है। महामारी की पृष्ठभूमि में लिखी गई उनकी कविताएं इस भीषण दौर की कसक और छटपटाहट को स्वर देती है।

संदर्भ

कोरोना संदर्भित अनेक घटनाएँ अनेक रूपों में सामने आ रही है। साहित्यकार महामारी से उपजी परिस्थिति पर लिख रहे है पर लॉकडाउन के कारण पुस्तक रूप में प्रकाशन नहीं के बराबर है। पर सोशल मीडिया पर वे व्यक्त हो रहे है। इसलिए सोशल मीडिया पर प्रकाशित रचनाओं का चयन करना पड़ा।

सोशल मीडिया [व्हाट्सएप] पर प्रकाशित डॉ. हुबनाथ पाण्डेय की कविताएं

१. भूख से डर लगता है
२. खुशफहमी
३. श्रमिकमेध यज्ञ
४. हम भागे थे
५. हत्यारे
६. महामारी